पतंग की करामात

कहानी: निकोलस बर्न

चित्र: प्रिया

एकलव्य का प्रकाशन

पतंग की करामात

कहानीः निकोलस बर्न

चित्रः प्रिया

आकल्पन एवं डिज़ाइनः सौम्या मेनन

एकलव्य का प्रकाशन

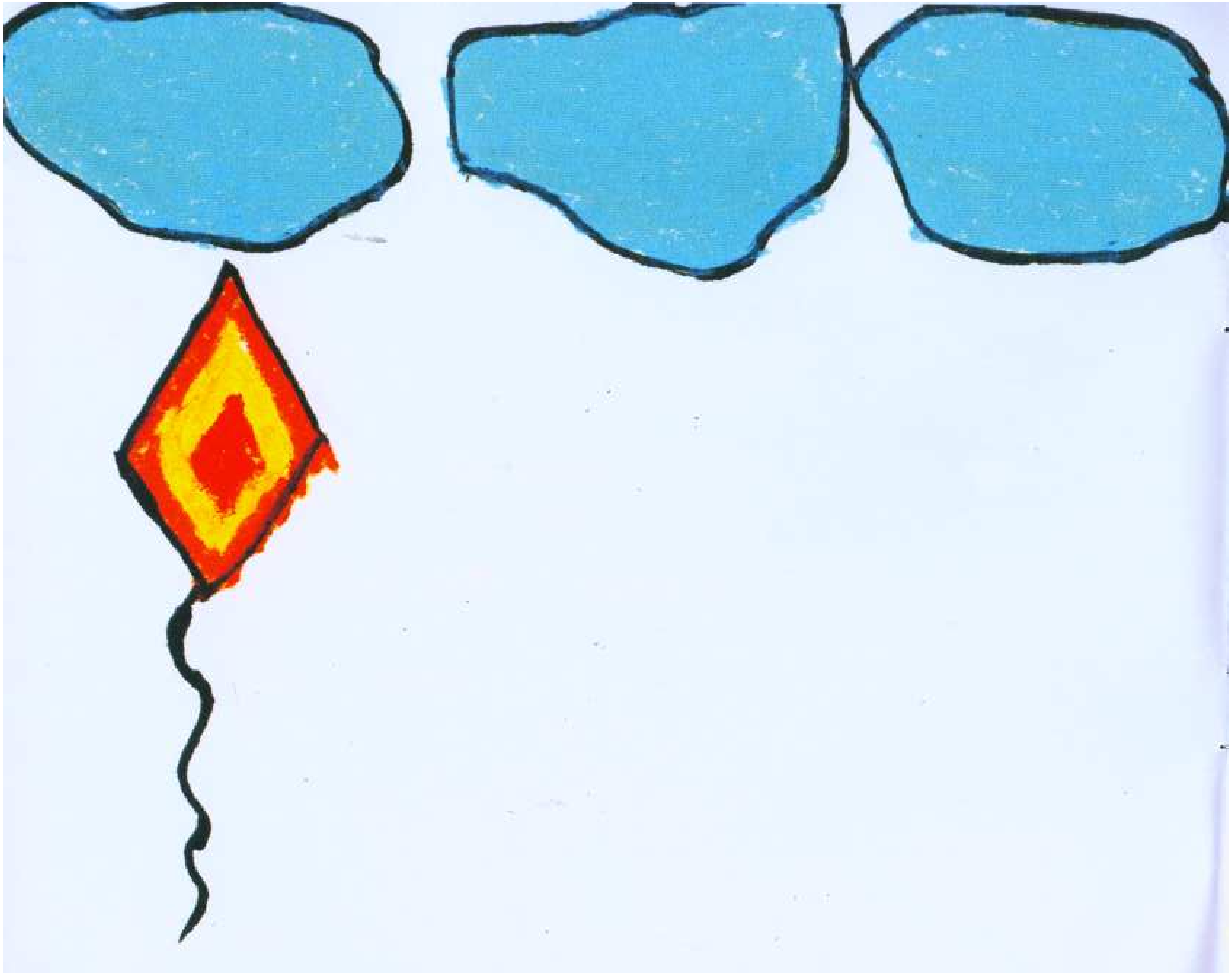

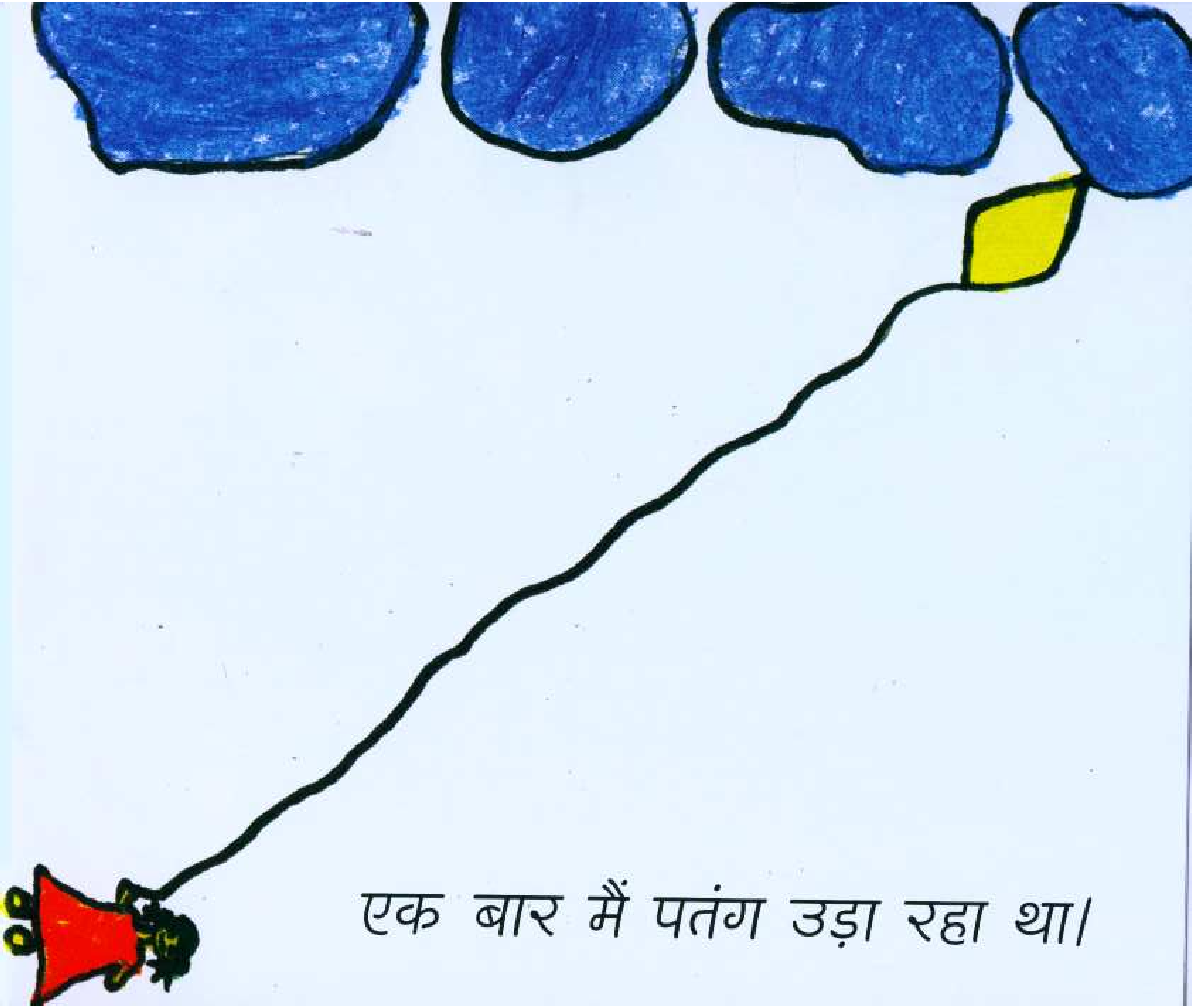

एक बार मैं पतंग उड़ा रहा था।

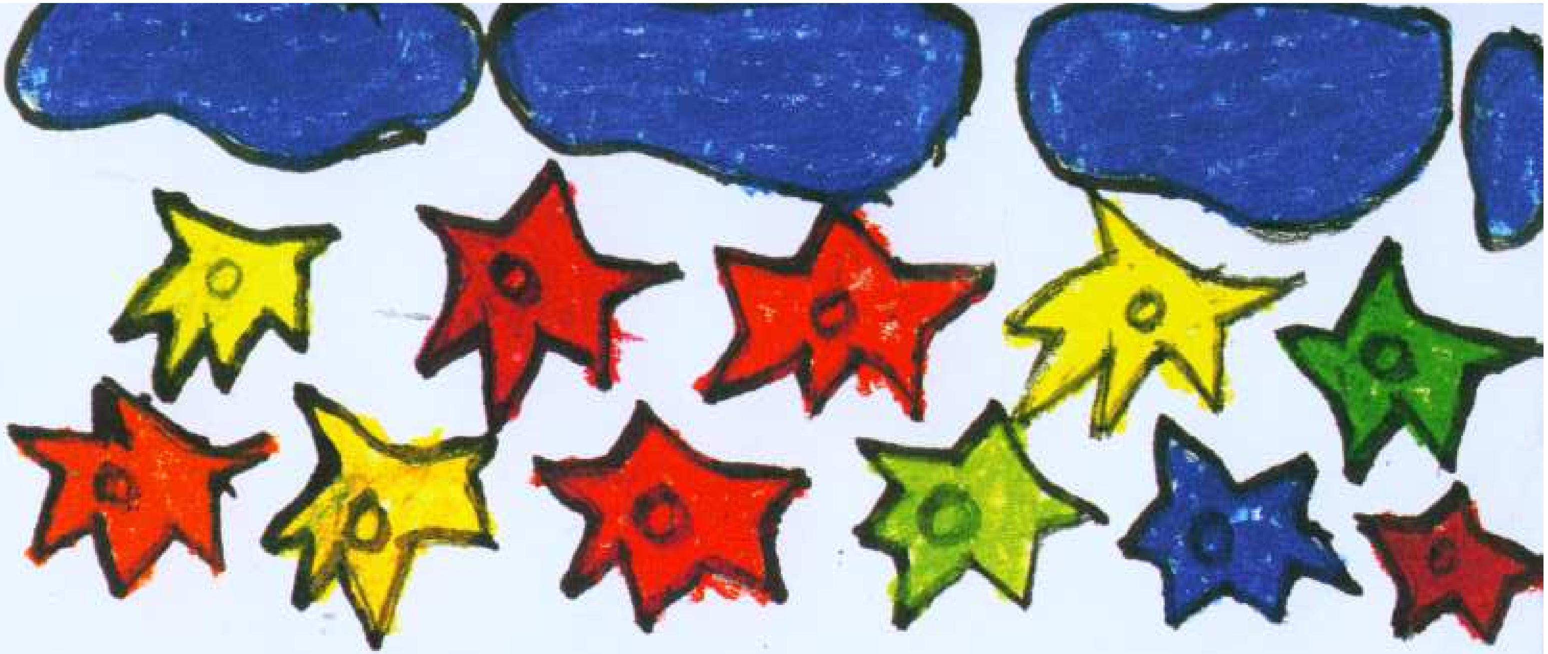

अचानक मेरी पतंग बहुत-बहुत दूर चढ़ गई।

मेरी पतंग चाँद में अटक गई थी, अब क्या!

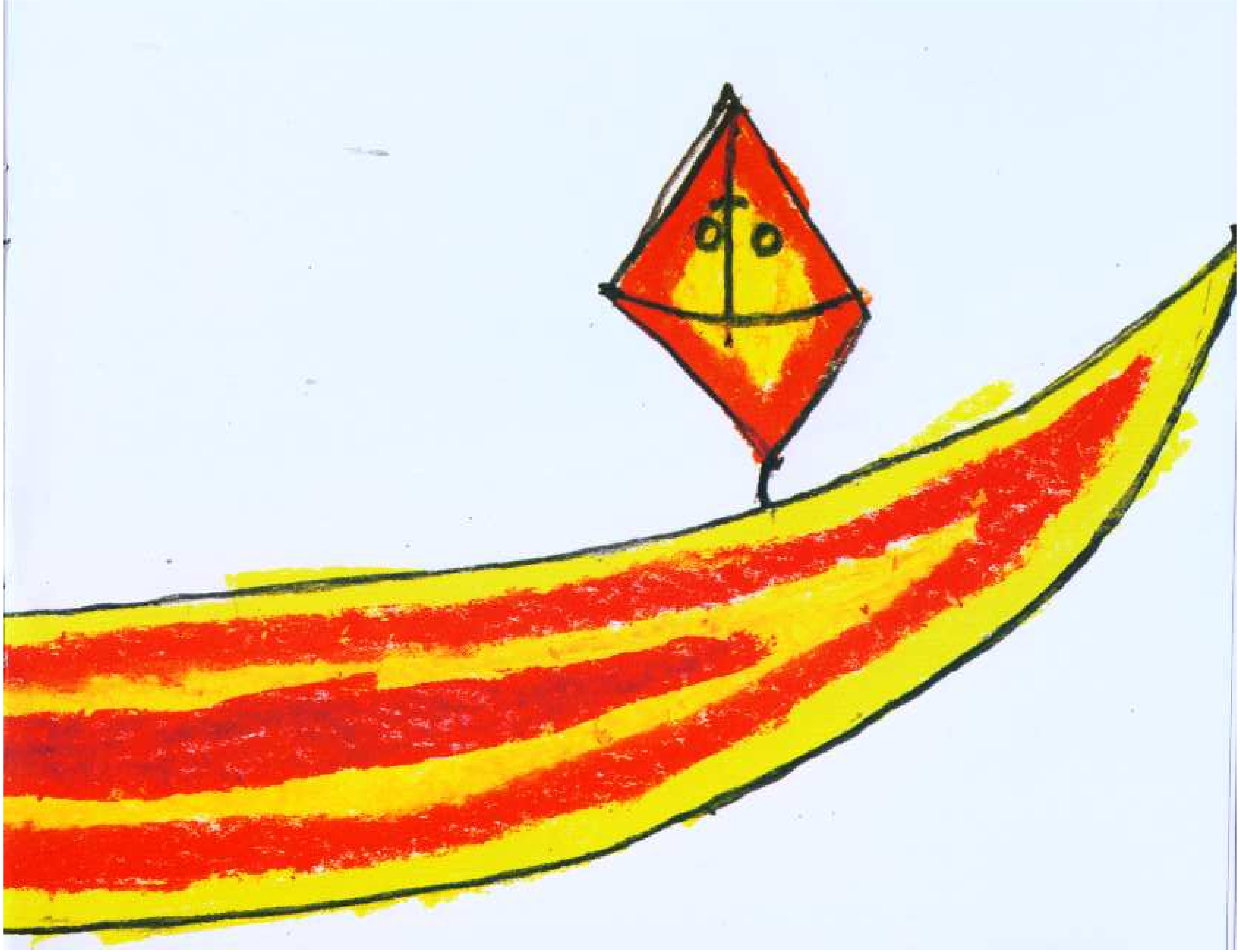

तब आसमान में दो आदमी चढ़े थे।

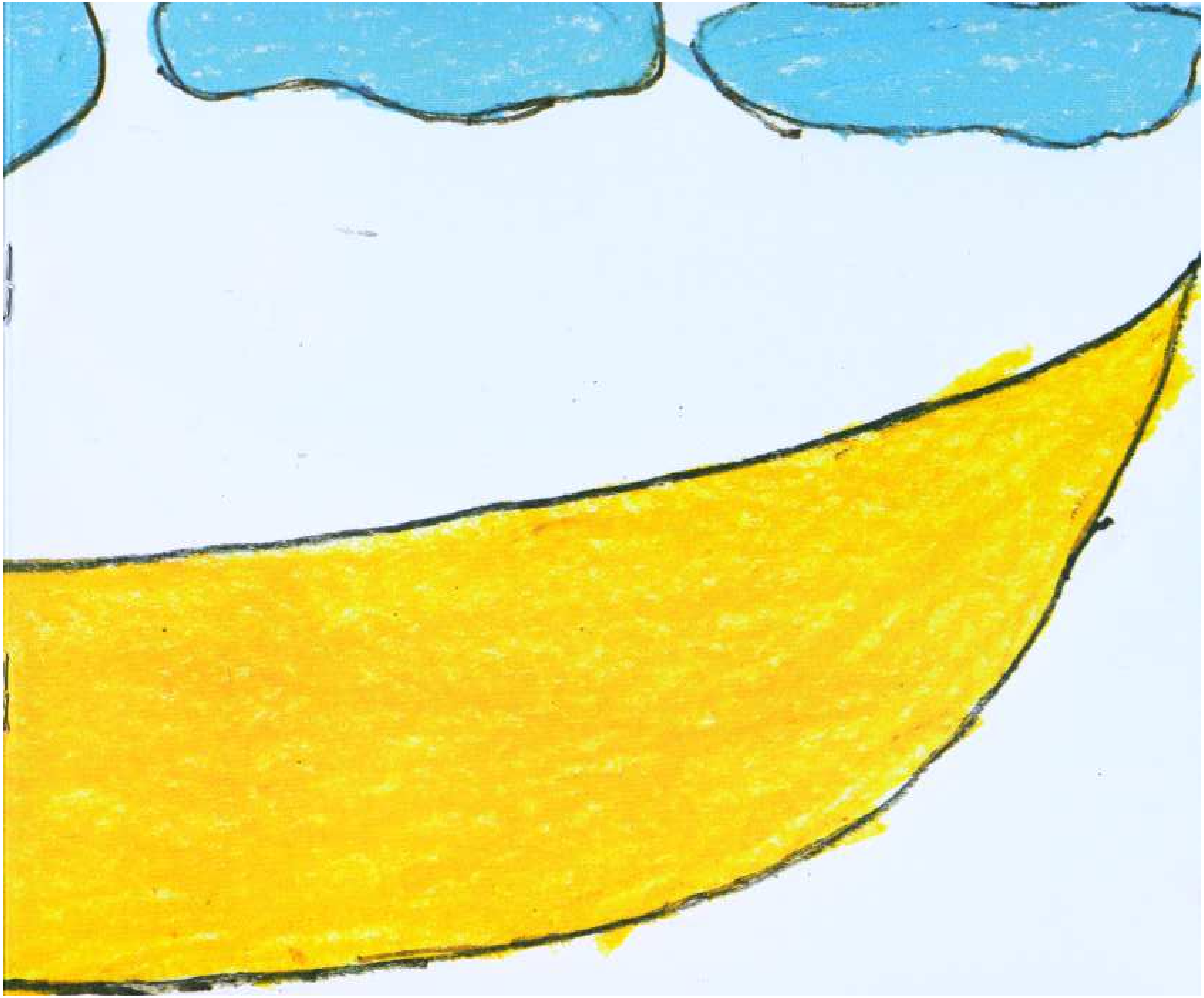

और वे नीचे नहीं आ पा रहे थे।

भूल से वे दोनों मेरी पतंग पर बैठ गए।

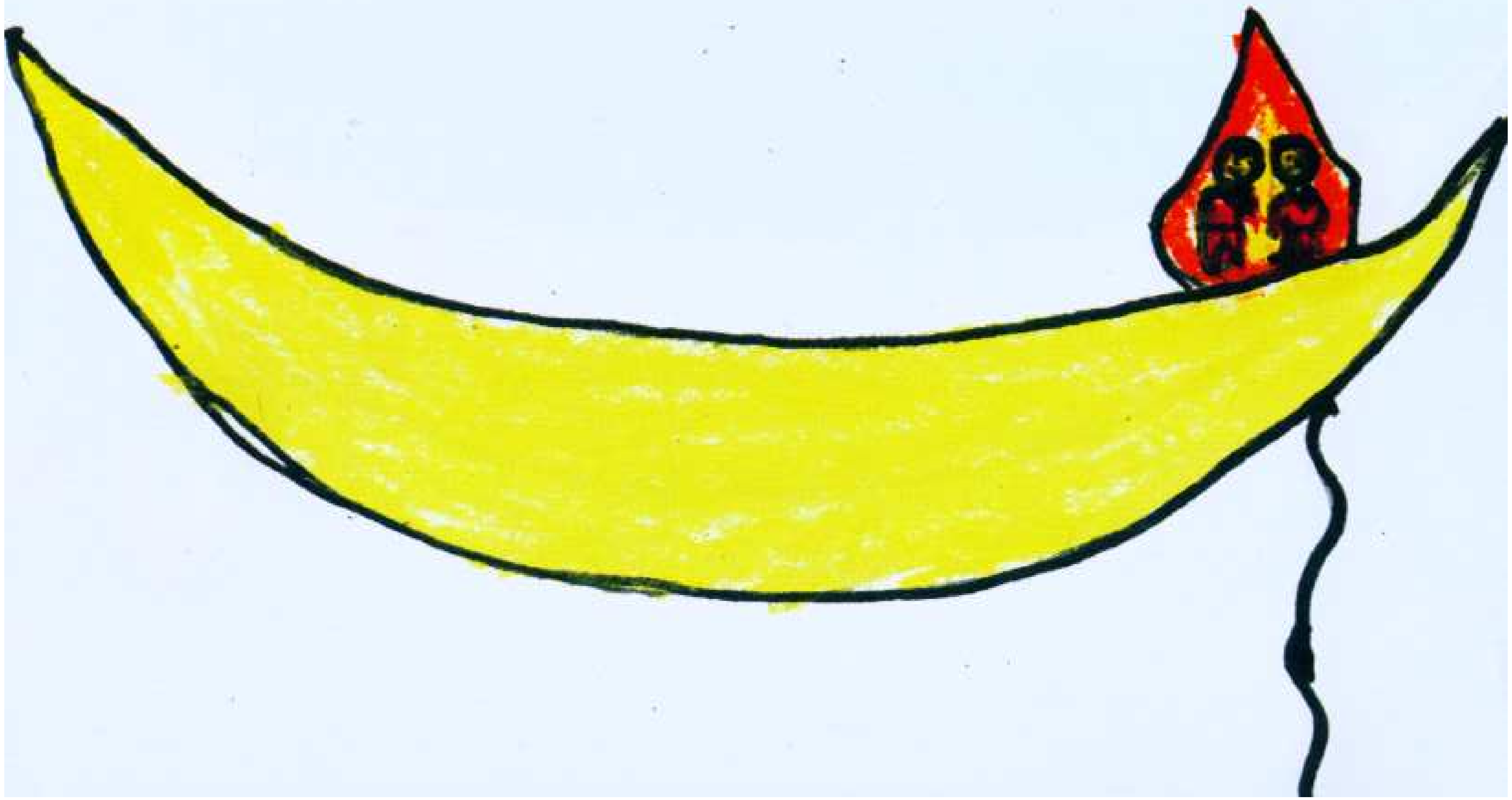

मैंने एक झटका मारा।

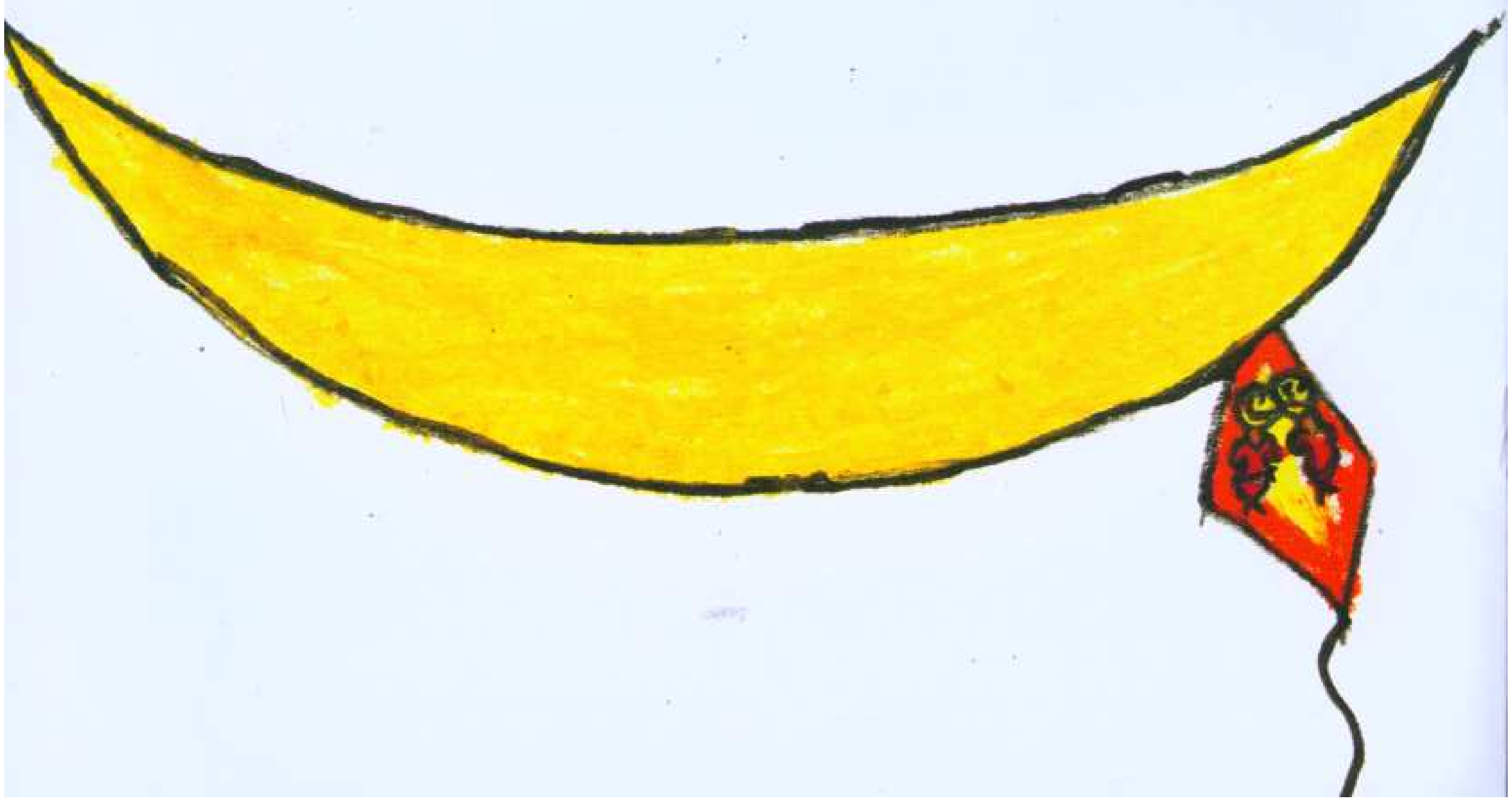

तो वे दोनों मेरी पतंग के साथ नीचे आ गए।

पतंग की करामात
PATANG KI KARAMAAT

कहानीः निकोलस बर्न, पाँचवीं, हरदा, म.प्र.। (चकमक सितम्बर, 1989 में प्रकाशित।)
चित्रः प्रिया
आकल्पन एवं डिज़ाइनः सौम्या मेनन

©एकलव्य
इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए मुफ्त वितरण हेतु इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

दिसम्बर 2013 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट व नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81300-91-6
मूल्यः ₹ 30.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

पतंग की करामात

पतंग उड़ी, उड़ी और उड़ती चली आसमान में। फिर जा अटकी चाँद पर। जब वापस धरती पर लौटी तो अपने साथ क्या लाई?

पढ़ो और जानो...

प्रिया धुर्वे: भोपाल में गंगा नगर गोंड बस्ती में रहती हैं। वे सातवीं कक्षा में पढ़ाई करती हैं पर स्कूल जाना इन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। प्रिया को मिट्टी के खिलौने और चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता है। स्वभाव से अंतरमुखी प्रिया घर पर खाली समय में कहानियों की किताबें पढ़ती हैं। ज़्यादा लोगों से इनकी दोस्ती नहीं है पर अपने समुदाय के बच्चों के साथ खेलना इन्हें अच्छा लगता है। इस किताब के चित्र इन्होंने मुस्कान संस्था के सेंटर में पढ़ाई करने के दौरान सौम्या मेनन से एनिमेशन सीखते हुए बनाए हैं।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 30.00

A1223H

ISBN: 978-93-81300-91-6

9 789381 300916

parag SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित